Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

कक्षा 10 – हिंदी

महामैराथन क्लास

पद्यांश

सन्दर्भ–प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी'** के काव्य-खण्ड में संकलित **श्री रामनरेश त्रिपाठी** द्वारा रचित 'स्वदेश प्रेम' शीर्षक कविता से अवतरित है। यह कविता त्रिपाठी जी के काव्य-संग्रह **'स्वप्न'** से ली गयी है।

अतुलनीय जिसके प्रताप का, साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर।
घूम-घूम कर देख चुका हैं, जिनकी निर्मल कीर्ति निशाकर।।
देख चुके हैं जिनका वैभव, ये नभ के अनन्त तारागण।
अगणित बार सुन चुका है नभ, जिनका विजय-घोश रण-गर्जन।।

काव्यगत सौंदर्य –रस-वीर, छन्द-मुक्त, अलंकार- अनुप्रास, पुनरूक्तिप्रकाश, भाषा-साहित्यिक खड़ी बोली, गुण-ओज।

1.उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

2.रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–व्याख्या–कवि कहता है कि तुम उन पूर्वजों का स्मरण करो जिनके बेजोड़ प्रताप का सूर्य आज भी प्रत्यक्षरूप से साक्षी है। ये ही तो वे पूर्व पुरूष थे जिनकी धवल और स्वच्छ कीर्ति को यत्र–तत्र सर्वत्र घूम–घूमकर चन्द्रमा भी देख चुका है। हमारे पूर्वज ऐसे थे जिनके ऐश्वर्य को तारों का अनन्त समूह बहुत पहले दख चुका था। ऐसे थे हमारे पूर्वज, जिनके विजय–घोषों और युद्ध–गर्जनाओं को आकाश अनगिनत बार सुन चुका है, अर्थात हमारे पवित्र–चरित्र, पूर्वजों का प्रताप, यश, वैभव, युद्ध–कौशल आदि सब–कुछ अद्‌भुत और अभूतपूर्व था।

3.भारत देश के प्रताप का साक्षी कौन–कौन है?

उत्तर–भारत देश के प्रताप के साक्षी सूर्य, चन्द्रमा, आकाशएवं अनन्त तारागण है।

4.उपर्युक्त पद्यांश में 'दिवाकर' किसे कहा गया है?

उत्तर–सूर्य को।

5.प्रस्तुत पक्तियों में कवि ने किसका गरिमापूर्ण वर्णन किया है?

उत्तर–अपने पराक्रमी पूर्वजों गरिमापूर्ण वर्णन किया है।

शोभित है सर्वोच्च मुकुट से, जिनके दिव्य देश का मस्तक,

गूँज रही हैं सकल दिशाएँ, जिनके जय–गीतों से अब तक।।

जिनकी महिमा का है अविरल, साक्षी सत्य– रूप हिम–गिरि–वर।

उतरा करते थे विमान–दल जिसके विस्तृत वक्ष–स्थल पर।।

काव्यगत सौंदर्य –रस–वीर, छन्द–मुक्त, अलंकार– अनुप्रास, पुनरूक्तिप्रकाश, भाषा–साहित्यिक खड़ी बोली, गुण–ओज।

1.उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर– उपर्युक्त।

2.रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

उत्तर-**व्याख्या-** कवि कहता है कि भारत एक महान् एवं प्राचीन दिव्य देश है, जिसके मस्तक पर हिमालयरूपी सर्वोच्च मुकुट सुशोभित है। हमारे पूर्वज इतने ज्ञानी, गुणी, वीर और परोपकारी थे कि उनके विजय के यशगाान से आज भी सम्पूर्ण दिशाएँ गूँज नही हैं। वे हमारे ही पूर्वज थे, जिनकी महिमा के साक्षी हिमालय पर्वत और वन प्रान्त के पेड़-पौधे हैं। हिमालय और वन आज भी उनके सत्य रूप का बोध कराते हैं। यह हमारे देश की विस्तृत भारत भूमि ही है, जिसके वक्षस्थल पर अन्य देशों के विमान भी उतरा करते थे अर्थात् भारत की कीर्ति को सुनकर दूर-दूर से विदेशी यहाँ आया करते थे। इस प्रकार भारत की कीर्ति सम्पूर्ण विश्व में फैली थी।

3. उपर्युक्त पद्यांश में कौन-सा रस है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-वीर रस (स्थाई भाव-उत्साह)

4. हिमालय किसका साक्षी है?

उत्तर-हिमालय पूर्वजों की महिमा का साक्षी है।

विषुवत् रेखा का वासी जो, जीता है नित हाँफ-हाँफ कर।
रखता है अनुराग अलौकिक, वह भी अपनी मातृभूमि पर।।
ध्रुव-वासी जो हिम में तम में, जी लेता है काँप-काँप कर।
वह भी अपनी मातृ-भूमि पर, कर देता है प्राण निछावर।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-वीर, छन्द-मुक्त, अलंकार- अनुप्रास, पुनः क्तिप्रकाश, भाषा-साहित्यिक खड़ी बोली, गुण-ओज।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर-उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर-व्याख्या-त्रिपाठी जी कहते हैं, कि भूमध्यरेखा-क्षेत्र में रहनेवाले व्यक्ति, जो वहाँ की असहनीय गर्मी के कारण हाँफ-हाँफकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं, अपनी जन्मभूमि से

बहुत अधिक प्रेम करते हैं और उसके प्रति अपार श्रद्धा का भाव रखते हैं। वेऐसे भीषण गर्मी के क्षेत्र को त्यागकर अन्य शीतल प्रदेश में जाकर रहना पसन्द नहीं करते हैं। इसी प्रकार ध्रुव प्रदेश में, जहाँ हर समय बर्फ जमी रहती है, असहनीय सर्दी पड़ती है तथा कोहरे के कारण दिन में भी रात का भ्रम होने लगता है, किन्तु वहाँ के निवासी भी जीवन की यातनाओं और विपदाओं को सहते हुए, काँप-काँपकर अपना जीवन उसी प्रदेश में व्यतीत करना पसन्द करते हैं, क्योंकि उनमें भी अपने देश और जन्मभूमि के प्रति अटूट प्रेम होता है। उसकी रक्षा के लिए वे अपने प्राणों को न्योछावर कर देते है।

3. **विषुवत रेखा का वासी कैसा जीवन व्यतीत करता है? उपर्युक्त पद्यांश के आधार पर लिखिए।**
उत्तर-विषुवत रेखा का वासी असहनीय गर्मी के कारण हाँफ- हाँफ कर जीवन व्यतीत करता है।

4. **'अनुराग अलौकिक' तथा 'हिम में, तम में ' में कौन-सा अलंकार है?**
उत्तर-अनुप्रास अलंकार

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

5. ध्रुववासी कैसा जीवन व्यतीत करता है? उपर्युक्त पद्यांश के आधार पर लिखिए।

उत्तर-ध्रुववासी कोहरे के कारण अंधकारमयएवं असहनीय सर्दी के कारण काँप-काँपकर जीवन व्यतीत करता है।

निर्भय स्वागत करो मृत्यु का, मृत्यु एक है विश्राम-स्थल।
जीव जहाँ से फिर चलता है, धारण कर नव जीवन-संबल।।
मृत्यु एक सरिता है, जिसमें, श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है, कायारूपी वस्त्र बहाकर।।

काव्यगत सौंदर्य -रस-शांत, छन्द-मुक्त, अलंकार- अनुप्रास, रूपक, श्लेष, भाषा-साहित्यिक खड़ी बोली, गुण-प्रसाद।

1. प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– **व्याख्या**– हे भारत के वीरों! तुम निर्भय होकर मृत्यु का स्वागत करो और मृत्यु से कभी मत डरो, क्योंकि मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य अपने जीवनभर की थकावट को दूर कर विश्राम प्राप्त करता है, अतः मानव को उससे भयभीत नहीं होना चाहिए। मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण करता है और पुनः नवीन जीवन की यात्रा पर अग्रसर होता है। कवि कहता है कि मृत्यु एक नदी है, जिसमें नहा कर मनुष्य जीवनभर की थकान को दूर करता है। वह उस मृत्यरूपी नदी में अपने शरीररूपी पुराने वस्त्र को बहा देता है और पुनः दूसरे नये जीवन रूपी वस्त्र को धारण करता है कवि का तात्पर्य यह है कि हमें निर्भीकता और उल्लास के साथ मृत्यु का स्वागत करना चाहिए।

3. **मृत्यु को किस प्रकार की नदी बताया गया है।**

उत्तर–मृत्यु को एक ऐसी नदी बताया गया है जिसमें स्नान करके मनुष्य जीवन भर की थकान को दूर करता है। वह उस मृत्यु रूपी नदी में अपने शरीरूपी पुराने वस्त्र को बहा देता है और नवीन जीवन:पी वस्त्र को धारण करता है।

4. **यहाँ पर कवि भारत के युवकों से क्या आह्वान किया है?**

उत्तर-यहाँ पर कवि ने भारत के युवकों से निडर होकर देश के लिए सबकुछ समर्पित कर देने का आह्वान करता है।

सच्चा प्रेम वही है जिसकी तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।

त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर।

देश-प्रेम वह पुण्य-क्षेत्र है, अमल असीम त्याग से विलसित।

आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है विकसित।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-शांत, छन्द-मुक्त, अलंकार- अनुप्रास, भाषा-सरल खड़ी बोली, गुण-प्रसाद।

1. **प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर-उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-व्याख्या-कवि कहता है कि सच्चा प्रेम वही है, जिसमें आत्म-त्याग की भावना होती है, अर्थात् आत्म-त्याग पर ही सच्चा प्रेम निर्भर होता है। सच्चे प्रेम के लिए यदि हमें अपने प्राणों को भी न्योछावर करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए। बिना त्याग के प्रेम प्राणहीन या मृत है। त्याग से ही प्रेम में प्राणों का संचार होता है, अतः सच्चे प्रेम के लिए प्राणों का बलिदान करने को भी सदैव प्रस्तुत करना चाहिए। देशप्रेम वह पवित्र भावना है, जो निर्मल और सीमारहित त्याग से सुशोभित होती है। देश प्रेम की भावना से ही मनुष्य की आत्मा विकसित होती है। आत्मा के विकास से मनुष्य का विकास होता है, अतः देशप्रेम से आत्मा का विकास और आत्मा के विकास से मनुष्यता का विकास करना चाहिए।

3. उपर्युक्त पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

उत्तर- अनुप्रास अलंकार

4. उपर्युक्त पद्यांश का मूल भाव क्या है?

उत्तर-यहाँ देश-प्रेम की उत्पत्ति के मूल-भावों पर प्रकाश डाला गया है।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

5. मनुष्य की आत्मा और मानवता का विकास किससे होता है?

उत्तर- देश-प्रेम की भावना से मनुष्य की आत्मा और मानवता का विकास होता है।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ **पं० माखनलाल चतुर्वेदी** की **'जवानी'** शीर्षक कविता से ली गई हैं। यह कविता उनके काव्य-संग्रह **'हिमकिरीटिनी'** से हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित की गई है।

प्राण अन्तर में लिये, पागल जवानी!
कौन कहता है कि तू विधवा हुई, खो आज पानी?
चल रहीं घड़ियाँ, चले नभ के सितारे,
चल रहीं नदियाँ, चले हिम-खण्ड प्यारे,
चल रही है साँस, फिर तू ठहर जाये?
दो सदी पीछे की तेरी लहर जाये?
पहन ले नर-मुंड-माला, उठ, स्वमुंड सुमेरू कर ले;
भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी, प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी!

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

काव्यगत सौंदर्य–रस–वीर, छन्द–मुक्त, अलंकार–अनुप्रास, उपमा, भाषा–खड़ी बोली, गुण–ओज।

1. **प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

   उत्तर–उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

   उत्तर–**व्याख्या**–कवि कहता है कि अरी पागल जवानी! वह तू ही तो है जो अपने भीतर उत्साह–शक्ति और प्राणवत्ता को समेटे रहती है। यह कौन कहता है कि तूने अपना तेज खो दिया है और तू निस्तेज हो गई है? मैं जिधर भी दृष्टिपात करता हूँ उधर गति–ही गति दिखाई देती है। घड़ियाँ निरन्तर चल रही हैं। आसमान के सितारों में भी गति दिखाई दे रही है। नदियाँ निरन्तर गतिमान हैं और पहाड़ों पर बर्फ के टुकड़े सरक–सरककर अपनी गति दिखा रहे हैं। प्राणिमात्र की साँसें निरन्तर चल रही हैं। इस गतिशील वातावरण मेंऐसा कैसे सम्भव हो सकता है कि तू ठहर जाए? जब आवश्यकता हो तो तुझमें ज्वार–भाटा न आए और दो–सौ वर्ष बाद तुझमें लहरें उठें, यह कैसे सम्भव हो सकता है? तू उठ और मनुष्यों

के मुण्डों की माला पहन ले। नरमुण्डों की इस माला में अपने सिर को सुमेरु बना। समर्पण की आवश्यकता पड़े, तो पीछे मत हट। जिस प्रकार लहराते हुए धानों की हरियाली में धरती का जीवन झलकता है, ऐसे ही हे जवानी! तू भी उत्साह में भरकर धानी चूनर ओढ़ ले। प्राण-तत्त्व तेरे साथ हैं। अतः हे जवानी! आलस्य को त्याग और उठकर खड़ी हो। तू अपने कर्त्तव्य को समझने का प्रयास कर।

3. उपर्युक्त पद्यांश में कवि ने युवकों को क्या संदेश दिया है?

उत्तर-कवि ने युवकों को सम्बोधित करते हुए गतिशील, स्वाभिमान के साथ जीने, उत्साही और शिवसंकल्प वाले बनने का संदेश दिया है।

रक्त है? या है नसों में क्षुद्र पानी!
जाँच कर, तू सीस दे-देकर जवानी?
वह कली के गर्भ से फल रूप में, अरमान आया!
देख तो मीठा इरादा, किस तरह, सिर तान आया!
डालियों ने भूमिरूख लटका दिये फल, देख आली!
मस्तकों को दे रही संकेत कैसे, वृक्ष-डाली!

काव्यगत सौंदर्य-रस-वीर, छन्द-मुक्त, अलंकार-अनुप्रास, उपमा,:पक, भाषा-खड़ी बोली, गुण-ओज।

1. **प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**
   उत्तर-उपर्युक्त

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-व्याख्या- युवावर्ग को सम्बोधित करते हुए कवि कहते हैं आपके शरीर में आपकी नशों में उत्साह रूपी खून बह रहा है या पानी अपना सर्वस्व देकर इसकी जाँच करो। वे कहते हैं कि अरी जवानी! तू अपनी इच्छा-शक्ति को शुभ संकल्प वाली बना ले। सर्वत्र आशा का संचार हो रहा है। डालियों पर खिलती कलियों के भीतर से फल झाँकने लगे हैं, जोऐसे प्रतीत हो रहे हैं मानो कली की अभिलाषाओं ने जन्म लिया है। देख तो सही, कली का मधुर संकल्प किस तरह ठाठ-बाट के साथ सधकर खड़ा हो गया । कवि जवानी को कहना चाहता है कि जिस प्रकार कली से फूल और फूल से सुन्दर फल बनता है, उसी प्रकार मन में उठने वाली तेरी इच्छाएँ दृढ़ होकर तथा शुभ संकल्पों का रूपधारण करके व्यावहारिकरूप में परिणत हों। अरी सखी जवानी! देख तो सही, वृक्ष की डालियों पर ज्यों ही फल आए वे भार से पृथ्वी की ओर झुकने लगीं, मानो डालियों ने पृथ्वी को उपहार दे डाले हैं। वृक्ष की ये डालियाँ, लगता है कि जवानी को यह संकेत दे रही हैं कि यदि आवश्यकता पड़े तो अपने सिर को

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

भी समर्पित कर देना। जिस प्रकार डालियाँ फल देती हैं, उसी प्रकार जवानियाँ अपने मस्तक समर्पित कर देती है। फल देना या सिर देना एक ही लक्ष्य की ओर संकेत करता है। हे जवानी! तू स्वयं में वृक्ष की कहानी को गूँथकर, युग-युग तक अपने परोपकारी संकल्पों का सन्देश देती चल।

3. उपर्युक्त पद्यांश में किस अलंकार की अभिव्यक्ति हुई है?

उत्तर-अनुप्रास, उपमा तथा:पक अलंकार है।

श्वान के सिर हो चरण तो चाटता है!
भौंक ले-क्या सिंह को वह डाँटता है?
रोटियाँ खायीं कि साहस खो चुका है,
प्राणि हो, पर प्राण से वह जा चुका है।
तुम न खेलो ग्राम-सिंहों में भवानी!
विश्व की अभिमान मस्तानी जवानी!

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

काव्यगत सौंदर्य–रस–वीर, छन्द–मुक्त, अलंकार–अनुप्रास, उपमा,:पक, भाषा–खड़ी बोली, गुण–ओज।

1. **प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**
   उत्तर– उपर्युक्त
2. **'श्वान के सिर हो, चरण तो चाटता है!' इस पंक्ति में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर– कवि का कथन है कि सिर तो कुत्ते के भी होता है, किन्तु स्वाभिमान की भावना न होने के कारण वह अपने पालनेवाले के पैरों को चाटता रहता है। कुत्ता चाहे कितना ही जोर से भौंक ले, किन्तु उसमें इतना साहस नहीं होता कि वह शक्तिशाली सिंह को डाँट सके।
3. **रेखांकित अशं की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर–**व्याख्या–** कवि का कथन है कि सिर तो कुत्ते के भी होता है, किन्तु स्वाभिमान की भावना न होने के कारण वह अपने पालने वाले के पैरों को चाटता रहता है। कुत्ता चाहे कितना ही जोर से भौंक ले, किन्तु उसमें इतना साहस नहीं होता कि वह शक्ति शाली सिंह

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

को डाँट सके। क्यों कि जब वह दूसरों की रोटियाँ खाता है तब वह रोटियाँ नहीं अपितु अपना साहस खा रहा होता है। तात्पर्य यह है कि स्वाभिमान को व्यागकर अपना पेट भरने वाला व्यक्ति आने साहस और अपनी क्षमताओं को नष्ट कर देता है। जीवित प्राणी होने पर भीऐसा व्यक्ति मृतक के समान ही हो जाता है। इसलिए कवि ने युवाशक्ति को सम्बोधित करते हुए कहा है कि शक्ति के पुंज हे युवाओ! तुम संसार का अभिमान हो। तुम कायर, स्वाभिमान से रहित और परतन्त्र प्रकृति वाले कुत्तों जैसे व्यक्तियों के साथ जीवन-निर्वाह मत करो, इससे तुम्हारा स्वाभिमान भी नष्ट हो जायेगा। तात्पर्य यह है कि श्वान वृत्ति वाले इन कायरों का साथ छोड़ दो। तुम ही तो इस विश्व के स्वाभिमान हो।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

विश्व है असि का ? नहीं संकल्प का है,
हर प्रलय का कोण, काया कल्प का है,
फूल गिरते, शूल शिर ऊँचा लिये हैं,
रसों के अभिमान को नीरस किये हैं!
खून हो जाये न तेरा देख, पानी!
मरण का त्योहार, जीवन की जवानी।

काव्यगत सौंदर्य–रस–वीर, छन्द–मुक्त, अलंकार–अनुप्रास, उपमा, भाषा–साहित्यिक हिन्दी, गुण–ओज।

1. **प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**
उत्तर–उपर्युक्त

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

2. रेखांकित अशं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–**व्याख्या**–कवि कहता है कि क्या यह सम्पूर्ण संसार तलवार की धार अर्थात् शस्त्र–बल का ही है अर्थात् क्या इस संसार में केवल हथियारों के आधार पर ही क्रान्ति लाई जा सकती है? नहीं,ऐसा नहीं है। यह संसार दृढ़ निश्चय वाले व्यक्तियों का है, अर्थात यह संसार संकल्प पर आधारित है। इस पर विजय तलवार की धार द्वारा नहीं, अपितु दृढ़ निश्चय द्वारा ही पाई जा सकती है। प्रत्येक प्रलय का उद्देश्य संसार में पूर्ण परिवर्तन या क्रान्ति ला देना होता है। अतः जब नवयुवक किसी बात का संकल्प कर लेते हैं तो उनके इस संकल्प के फलस्वरूप ही विश्व में परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है, उनके संकल्पों सेएक क्रान्ति आ जाती है। अतः युवकों को दृढ़ संकल्प के द्वारा क्रान्ति लाने के लिए अग्रसर होना चाहिए।

जब व्यक्ति में दृढ़ संकल्पों की कमी होती है तो उसका पतन हो जाता है। वायु के हल्के झोंके से फूल नीचे गिर जाते हैं और उनकी समस्त सुन्दरता नष्ट हो जाती है, लेकिन काँटे

आँधी और तूफान में भी गर्व से अपना सिर उठाए रहते हैं। काँटा अपनी दृढ़ संकल्प-शक्ति से चकनाचूर कर देते हैं।

कवि जवानी को सम्बोधित करते हुए कहता है कि हे जवानी! सजग होकर देख ले कि कहीं तेरा रक्त पानी न हो जाए, अर्थत् तेरा उत्साह समाप्त न हो जाय। वस्तुतः युवा जीवन में मृत्यु एक उल्लास-भरा त्योहार होता है।

3. **उपर्युक्त पंक्तियों मे कौन-सा रस एवं अलंकार है?**

उत्तर-वीर रस एवं उपमा तथा अनुप्रास अलंकार।

4. **कवि नवयुवकों को जाग्रत करते हुए क्या कहना चाहता है?**

उत्तर- कवि नवयुवकों को जाग्रत करते हुए कहना चाहता कि नवयुवक ही देश के अन्दर क्रान्ति ला सकते हैं। इसलिए उन्हें सदैव देश पर न्योछावर होने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज
अनुशासनेन विद्या
अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात्
मुक्तिः
ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम्